मुख्य संरक्षिका : श्रीमती सुशीला सिंहानिया
अध्यक्षा, प्रबन्ध तंत्र

संरक्षक : श्री अतुल बागला
सचिव, प्रबन्ध तंत्र

प्राचार्या : डॉ० अलका मिश्र

परामर्शदात्री समिति

डॉ० श्यामबाबू गुप्त
निदेशक
पं० दीनदयाल उपाध्याय शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज वि० वि०, कानपुर

डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
पी० पी० एन० डिग्री कॉलेज, कानपुर

डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव
अध्यक्ष, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास, विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ०प्र०)

आयोजन समिति

संयोजिका
डॉ० अलका द्विवेदी
ऐसो० प्रो०, हिन्दी विभाग
मो० : 9839308148

आयोजन सचिव
डॉ० रानी अग्रवाल
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
मो० : 9415727596

सह–संयोजिका
डॉ० मीना सिंह
ऐसो० प्रो०, हिन्दी विभाग
मो० : 9415131261

बुक–पोस्ट

पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्ममानववादी दर्शन की प्रसंगिकता

प्रतिष्ठा में,
प्रो०/डॉ०/श्री/श्रीमती .....

प्रेषक :
डॉ० अलका द्विवेदी
एसो. प्रो. हिन्दी–विभाग
जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
कैनाल रोड, कानपुर–208004
मो० नं.: 9839308148
E-mail : hindiseminar2018@gmail.com
Website :www.jdgpgcollegekanpur.org

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्ममानववादी दर्शन की प्रसंगिकता

शनिवार, 24 फरवरी 2018

जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सभागार

संयोजिका

डॉ. अलका द्विवेदी
ऐसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग

आयोजक

हिन्दी विभाग

जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
कैनाल रोड, कानपुर–208004
(छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर)

महाविद्यालय परिचय

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध जुहारी देवी गर्ल्स पी0 जी0 कॉलेज, कानपुर कैण्ट में स्थित महिलाओं की अग्रणी संस्था है जिसकी स्थापना सन 1963 में देश के प्रसिद्ध उद्योगपति सर पदमपत सिंहानिया के द्वारा की गई थी । तब से आज तक अपने अर्धशतकीय जीवनकाल में यह महाविद्यालय नगर की अग्रणी संस्थाओं के मध्य अपने को स्थापित करने में सफल रहा है । राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा अपने दोनों मूल्यांकनों में यह संस्था B ग्रेड प्राप्त करने में सफल रही । यह गंगा तट एवं कानपुर सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन के मध्य और प्रसिद्ध फूलवाग के पृष्ठ भाग में बसा है ।

संगोष्ठी : विषय एवं उद्देश्य

कर्त्ता का स्मारक कर्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता है । दुनिया में अनेक विचारक हुए जिनके विचार और कर्म उनके नाम और रूप की पहचान बने । इन्हीं में से एक नाम पं0 दीनदयान उपाध्याय का है । अपने जन्म से मृत्यु तक नियति के ताण्डव को सहते–सहते पं0 दीनदयाल जी अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, परिश्रम, त्याग और जनसेवा की सच्ची भावना के बल पर कर्मयोगी के रूप में प्रतिष्ठित हुए । समाजसेवी कार्यकर्ता एवं सर्वत्यागी संन्यासी को जब क्रूर शक्तियों ने मुट्टी भर राख मात्र बनाना चाहा तो उनकी चिता भस्म भारत के वैचारिक जगत का अभिषेक करते हुए अमर हो गयी ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी उपाध्याय जी केवल भारतीय विचारक ही नहीं, भारतीय राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार और पत्रकार भी थे । इन्होंने अपने एकात्म मानववाद द्वारा भारतीय राजनीति, समाज एवं संस्कृति को जो मार्ग दिखाया वह शत प्रतिशत भारतीय था जिसकी मंजिल 'सर्वजन सुखाय' थी । उनके शब्दों में – 'हमने किसी सम्प्रदाय या वर्ग की सेवा का नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया है । सभी देशवासी हमारे बान्धव हैं । जब तक इन सभी बन्धुओं को भारतमाता के सच्चे सपूत होने का गौरव नहीं प्रदान करा देते हम चुप नहीं बैठेंगे । हम भारतमाता को सही अर्थों में सुजलां, सुफलां बनाकर रहेंगे । हिन्द महासागर से लेकर हिमालय परिवेष्टित भारतखण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता, ज्ञानवत्ता, सुख और शान्ति की सप्त जाह्नवी का पुण्य प्रवाह नहीं ला पाते, हमारा भगीरथ तप पूरा नहीं होगा ।' यह वर्ष ऐसे विचारक और महानायक के जन्मशताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है ।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के कृतित्व का पुनर्मूल्यांकन वर्तमान की आवश्यकता है । मात्र भारतीय जनसंघ के महान नेता के रूप में प्रस्तुत करने की उस गलती से बचना होगा जो भीमराव अम्बेडकर को दलित नेता के रूप में मान कर की गई थी । ये भी अम्बेडकर की भाँति महन राष्ट्र नायक हैं । आज उनके एकात्ममानववाद की प्रासंगिकता को वैचारिक कसौटी पर कसने के लिए इस संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है ।

उपविषय

1. पं0 दीनदयाल जी का दार्शनिक चिन्तन
2. पं0 दीनदयाल जी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता
3. एकात्म मानव दर्शन में आरोग्य एवं पर्यावरण
4. एकात्म मानव दर्शन की अन्त्योदय योजना
5. पं0 दीनदयाल जी के शैक्षणिक विचार
6. पं0 दीनदयाल जी का राजनीतिक चिन्तन

शोध–सारांश अधिकतम 300 शब्दों में तथा शोध–पत्र 2500 शब्दों में MS Word Format में Kruti Dev 010 फान्ट साइज 14 या Times New Roman फान्ट साइज 12 में टंकित कर Email द्वारा अथवा CD व Hard Copy के साथ विलम्बतम 20 फरवरी 2018 तक अवश्य प्रेषित करें ।

Email : hindiseminar2018@gmail.com
Website : www.jdgpgcollegekanpur.org

चयनित शोध पत्र संगोष्ठी के बाद पुस्तकाकार रूप में ISBN से प्रकाशित किये जायेंगे ।

पंजीकरण शुल्क

शिक्षकों के लिये	–	रु0 200/-
शोधार्थी/छात्राओं के लिये	–	रु0 100/-

सम्बन्धित शुल्क पंजीकरण के समय ही महाविद्यालय में जमा किया जायेगा ।

सम्पर्क सूत्र

संयोजिका – डॉ. अलका द्विवेदी मो0 : 9839308148

आयोजन सचिव – डॉ. रानी अग्रवाल मो0 : 9415727596

महाविद्यालय मो0 : 9236247458, 9236247467

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्ममानववादी दर्शन की प्रसंगिकता

शनिवार, 24 फरवरी 2018

पंजीकरण प्रपत्र

नाम .....

पद .....

शिक्षा .....

संस्था/वि0वि0 .....

पता .....

.....

दूरभाष .....

मो0 नं0 .....

ई–मेल .....

ड्राफ्ट सं0 .....

बैंक का नाम .....

शाखा .....

शोध–पत्र शीर्षक .....

शोध पत्र प्रस्तुतीकरण .....

दिनांक हस्ताक्षर

नोट – इस प्रपत्र की छायाप्रति भी मान्य होगी । आवास हेतु महाविद्यालय पूर्व सूचना पर ही व्यवस्था कर सकेगा ।